Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date-
Do-Next class

Models of Psychology

Cognitive Model

पहचान की खोज (Search of Identity):-

'पहचान की खोज' वर्तमान तकनीकी (Techno-logical) अवैयक्तिक (Impersonal) समाज की देन है। हम क्या अथवा कौन है? (what or who we are):- आधुनिक सामाजिक व्यवस्था हर व्यक्ति के लिए एक पक्ष आत्मबोध (Self identity) आत्मबोध के संकट (Self identity crises) से जूझ रहा है। आत्मबोध का अर्थ अपने बारे में समझना, यानी स्व का बोध (knowing the self) होता है। विलियम जेम्स (William James) ने अपनी पत्नी के नाम प्रेषित एक पत्र में लिखा था – अंदर से एक आवाज आती है जो बोलता और कहता है - असल में यही मैं हूँ।"

स्व की पहचान' (आत्मबोध) से संबंधित संघर्ष या दुविधा (conflict or confusion) मूर्त अथवा अमूर्त (concrete or abstract) दोनों तरह का हो सकता है। 'स्व' के बोध को किसी प्रकार का खतरा या क्षति की स्थिति उत्पन्न होती है तो या सामना करना पड़ता है तो, यही स्थिति तनाव (tension), दबाव, अथवा चिंता का मूल स्रोत होता है। जैसे गोद में लिया गया हुआ बच्चा अपने वास्तविक माता पिता की तलाश करता है तो यहाँ मूर्त रूप के स्व की पहचान संबंधी संघर्ष का उदाहरण मिलता है। ऐसा ही यदि कोई दार्शनिक संपूर्ण ब्रह्माण्ड की संदर्भ में जानना चाहता है 'मैं कौन हूँ' तो यहाँ अमूर्त स्वरूप की 'स्व' बोध संघर्ष का उदाहरण मिलता है।

Scanned with CamScanner

वयस्कावस्था से क्रमशः 'आत्म बोध' संबंधित संघर्ष की स्थितियाँ निरंतर जारी रहती है, जिसका अनुभव समय समय पर विभिन्न रूपों एवं तीव्रता की मात्रा में होती रहती है। जैसे :- स्वतंत्रता-निर्भरता (independence versus dependence) का संघर्ष माता-पिता एवं बालक की भूमिका से संबंधित संघर्ष, यौन-भूमिका संघर्ष, समाज में महिलाओं के स्थान से संबंधित संघर्ष इत्यादि।

संज्ञानात्मक विकृति (cognitive disorders) से संबंधित कुछ लक्षण मानसिक रोगियों में भी देखे जाते हैं। जैसे विभ्रम (hallucination), व्यामोह (delusion), चिंतन-संबंधी विकृतियाँ (thinking disorders), वाक् विकृतियाँ इत्यादि। संज्ञान मनोवैज्ञानिकों (cognitive psychologist) के अनुसार, ये सभी विकृतियाँ सूचना संसाधन (information processing) में होने वाली गड़बड़ी अथवा विफलताओं का कारण होती है।

संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (cognitive approach) पर आधारित असामान्यता के रोगियों के उपचार के लिए जो विधियों का प्रयोग की जाती है, उसका उद्देश्य रोगी को संघर्ष के स्वरूप (nature of conflict) एवं उसके परिणामों से अवगत कराना यानी 'चेतन बोध' को विकसित करना होता है। साथ ही चिकित्सक द्वारा व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने की सुझाव भी देना होता है। जैसे :- संसूचन (suggestion), मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विशेषज्ञों द्वारा सामूहिक परिस्थिति में प्रवचन।

इस प्रकार, असामान्यता का संज्ञानात्मक मॉडल (cognitive model of abnormality), चेतन-स्तर पर सूचना संसाधन प्रक्रिया (information processing) की त्रुटि को ही असामान्यता का प्रमुख कारण को मानता है, जिसकारण आत्मबोध, चिंतन, संचार आदि की प्रक्रियाओं में विकृतियाँ आती है। इस चिकित्सा हेतु भी संज्ञानात्मक स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

End